मैनेज और डैमेज

मनुष्य को जीवन में हर जगह कुछ न कुछ मैनेज (प्रबंध) करना ही पडता है. आपका प्रबंधन कैसा है ? इस पर ही आपके जीवन की उपलब्धियां और आपकी लोकप्रियता निर्भर करती है. अच्छा प्रबंधन जीवन को सुखमय बनाता है. मन को आनंद और संतोष देता है और कुप्रबंधन दुःख व अवसाद पैदा करता है. अपने दोस्तों और सहयोगियों में नाराजगी पैदा करता है. हमें आलोचनाओं का शिकार बनाता है. इसलिए सुप्रबंधन की कला को अपनाना बहुत जरूरी है. यह याद रखना चाहिये की यदि हम प्रबंधन नहीं कर रहे होते है, तो जरूर कोई न कोई मिसमेनेजमेंट अवश्य फैलाने का कारण बन रहे होंगे.

प्रबंधन का प्रारंभ आपनी जीवनचर्या को सुनियोजित बनाने और अपने शरीर तथा कर्मोन्द्रियों को सही दिशा में चलाने से होता है. यदि हमारा मन ही नियंत्रित नहीं है, तो जीवन कैसे ठीक होगा व सुखमय कैसे बनेगा ? क्योंकि वे अपने निजी विचारों और निजी जीवन का प्रभाव हमारे कार्यक्षेत्र तथा संपर्क-संबंध पर भी पडता है. एक दुःखी और अशांत या तनाव से घिरा हुआ व्यक्ति भला किसी संगठन के अन्य लोगों को सुखी कैसे बना सकता है ? यह अपने कार्य क्षेत्र पर भी तनाव व चिंता का वातावरण पैदा कर देता है.

यदि किसी व्यवस्था के साथ में हम अपना ताल-मेल नहीं बैठका पा रहे हैं, किसी कार्य या लोगों के समूह को सही ढंग से मैनेज नहीं कर पा रहे हैं तो हमारा कम से कम यह प्रयास अवश्य होना चाहिये कि किसी भी प्रकार से हम अपने कर्म, व्यवहार या नीतियों द्वारा अमुक व्यवस्था को क्षतिग्रस्त (डेमेज) न करे. इसके लिए बेहतर यह है कि हम सक्रिय प्रबंधन से हटकर दूसरों को नेतृत्व का अवसर प्रदान करें. क्योंकि हमें इस बात को हमेशा ध्यान में रखना चाहिये कि कोई भी संगठन या संस्थान, व्यक्ति से बडा होता है और कोई भी समाज संगठन से बडा होता है. इसी प्रकार कोई भी राष्ट्र किसी भी समाज या संप्रदाय से बडा होता है. कई बार मैनेजर को यह धोखा हो जाता है कि उसे दुसरों पर शासन करने का अधिकार मिल गया है, परन्तु वास्तव में यह सोच बिल्कुल गलत है. मैनेजमेंट का काम शासन करना नहीं, बल्कि लोगों में अनुशासन स्थापित करना है. शासन के लिए कानून और दण्ड की आवश्यकता होती है. लेकिन अनुशासन प्रेम, सहयोग और सद्भावना का नाम है. यही वास्तव में एक प्रबंधक का कार्य है.

अच्छे मैनेजमेंट का काम सभी लोगों को खुशहाल और संगठित रखना है. उसका दायित्व है कि वह अपने सहयोगियों को संकटों और कठिनाईयों से बचाए और साथ-साथ वह उनके जीवन में आनेवाले तुफानों और परिस्थितों से उन्हें उबारने का भी प्रयास करे. लेकिन जहां मिस-मैनेजमेंट होगा वहां लोग एक दुसरे को बचाने का नहीं डुबाने का प्रयत्न करेंगे. वे एक दूसरे का हिम्मत और उत्साह बढाने के बदले उन्हें हतोत्साहित और निराश करने का प्रयत्न करेंगे. वे आपस में प्रेम और सहयोग का वातावरण पैदा करने के बदले घृणा और असहयोग का वातावरण पैदा करेंगे. ऐसे मैनेजमंट, 'डेमेजमेंट' बन जाता है. जहां अधिकारी और अधीनस्थ दोनों ही तनावपूर्ण रहते है. ऐसी व्यवस्था लोगों की मानसिक अवस्था को विकृत बनाती है और ऐसा संगठन भी फलीभूत नहीं हो सकता. इसलिए उत्तम प्रबंधन के लिए परस्पर प्रेम, सहयोग और सद्भावना होना बहुत अधिक आवश्यक है. साथ ही नेतृत्व करने वालों और नेतृत्व में रहने वालों के बीच आपसी ताल-मेल और एक आत्मिक संबंध होना भी बहुत जरूरी है.

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com